P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-9*(Part-1) December 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

गांधीजी की अहिंसा की अवधारणा : वर्तमान में प्रासंगिकता

मन्जू लाडला
सह आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
श्री कल्याण राजकीय कन्या महाविद्यालय,
सीकर, राजस्थान

सारांश

''जिन ऋषियों ने हिंसा के बीच अहिंसा की खोज की, वे न्यूटन से अधिक प्रतिभाशाली थे। वे स्वयं वेलिंग्टन से भी बड़े योद्धा थे। शास्त्रों के प्रयोग का ज्ञान होने पर भी उन्होंने उसकी व्यर्थता को पहचाना और श्रांत संसार को बताया कि उसकी मुक्ति हिंसा में नहीं अपितु अहिंसा में है।''[1]

–महात्मा गांधी

आज दुनिया निश्चित रूप से विनाश के कगार पर खड़ी है। सतत् वैचारिक संघर्ष, विकट जातीय द्वेष और परमाणु अस्त्रों की संख्या में अंधाधुंध वृद्धि का बराबर बना हुआ खतरा, जिससे कभी भी अकल्पनीय विनाश की नौबत आ सकती है। ऐसी सूरत में मानव–जाति को अपने अस्तित्व–रक्षा के लिए नैतिक बल, अहिंसा का रास्ता चुनना होगा, क्योंकि भौतिक बल मानव जाति को आत्मसंहार की ओर ले जा रहा है। गांधी जी के अनुसार ''कल की दुनिया अहिंसा पर आधारित समाज होगी–होनी चाहिए। यह एक दूरस्थ लक्ष्य हैं लेकिन अप्राप्य नहीं है। कोई भी व्यक्ति दूसरों की प्रतीक्षा किये बिना भावी संसार की जीवन पद्धति को अहिंसक पद्धति अपना सकता है। यदि एक व्यक्ति ऐसा कर सकता है तो व्यक्ति समूह व राष्ट्र भी कर सकते है।'' प्रस्तुत शोध पत्र गांधीजी की अहिंसा की अवधारणा से ही सम्बन्धित है। इसके अन्तर्गत अहिंसा के अर्थ एवम् प्रयोग के सम्बन्ध में उपलब्ध भ्रान्तियों का निराकरण किया गया है। अहिंसा के क्रियात्मक व व्यावहारिक पक्ष को स्पष्ट करते हुए, वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता को सिद्ध किया गया है।

मुख्य शब्द : कगार, अहिंसा, आत्मसंहार, प्रासंगिकता।

प्रस्तावना

सामान्यता अहिंसा का अर्थ – ''किसी भी प्राणी को विचार, शब्दों या कार्यो से हानि नहीं पहुंचाना है।''[2] किन्तु गांधी जी के अनुसार अहिंसा का मर्म किसी को क्षति नहीं पहुंचाने की स्थूल व भौतिक क्रिया की अपेक्षा, इस क्रिया के पीछे विद्यमान मन्तव्य में निहित है। अहिंसा का यह नकारात्मक अर्थ (किसी को चोट न पहुंचाना) तभी पूर्ण होता है, जबकि इसके पीछे मूल में सकारात्मक प्रेरणा–प्राणिमात्र के प्रति निरपवाद प्रेम आवश्यक रूप से विद्यमान हो। प्रत्येक व्यक्ति के प्रति जागृत प्रेम या करूणा अहिंसा का सटीक मापदण्ड हैं। उदाहरणार्थ – ''यदि ऐसे व्यक्ति पर जो हमारे ऊपर आक्रमण करने आये, बदले में हम उस पर प्रहार करे तो यह कृत्य अहिंसक हो भी सकता है और नहीं भी। यदि हम भय के कारण उस पर प्रहार नहीं करते है तो यह अहिंसा नहीं है। किन्तु हम पूर्णतः सचेतन होकर, प्रहार करने वाले के प्रति करूणा और प्रेम के कारण उस पर प्रहार नहीं करते हैं तो यह निश्चित तौर पर अहिंसा है।''[3] अतः गांधी जी के अनुसार अहिंसा का सार शाश्वत प्रेम में समाविष्ट है। अपने मित्रों और सम्बन्धियों से प्रेम करना तो सहज भाव है। सच्चा अहिंसक दृष्टिकोण वह हैं, जो व्यक्ति को अपने विरोधियों और शत्रुओं से भी प्रेम करने को प्रेरित करे।

अहिंसा कोई जड़ सिद्धान्त नहीं है, अपितु एक गत्यात्मक और नैतिक आस्था हैं। विशिष्ट परिस्थितियों में अहिंसा का नियम किसी को न मारने के स्थूल विचार की अपेक्षा दूसरों के प्रति निःस्वार्थ प्रेम और उन्हें पीड़ा व कष्ट से मुक्त करने की निर्मल प्रेरणा से निर्दिष्ट है। ''यदि कोई प्राणी ऐसी पीड़ा से कराह रहा है, जिसका उपचार असंभव है तो असहनीय पीड़ा से मुक्त करने की दृष्टि से मार डालना हिंसा नहीं माना जायेगा। गांधी जी ने स्वयं अपने आश्रम में एक बछड़े को विष देकर मरवा दिया था, क्योंकि यह असहनीय पीड़ा से तड़प रहा था और वह निश्चित हो चुका था कि उसकी पीड़ा को कम करना तथा उसके प्राणों को बचाना असंभव था।[4] ''अहिंसा आस्था व निष्ठा का विषय है। नीति व्यक्ति के स्वार्थपरक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परिवर्तित हो सकती है,

किन्तु एक नैतिक आस्था के रूप में अहिंसा के प्रति समर्पित व्यक्ति की अहिंसा के प्रति आस्था, किसी कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अडिग रहती है।''[5]

''अपनी गत्यात्मक स्थिति में, अहिंसा सचेतन कष्ट सहन है। अहिंसा का अर्थ बुराई करने वाले की इच्छा के समक्ष विनीत बनकर आत्मसमर्पण कर देना नहीं हैं, बल्कि उसके विरूद्ध अपना पूरा आत्मबल लगा देना है। मानव जाति के इस नियम के अनुसार आचरण करते हुए, एक अकेला व्यक्ति भी अपने सम्मान, अपने धर्म या अपनी आत्मा की रक्षा के लिए किसी अन्यायी साम्राज्य के पतन अथवा पुर्नुरूद्धार की नींव रख सकता है।''[6]

अध्ययन के उद्देश्य

1. अहिंसा का अर्थ एवम् स्वरूप को स्पष्ट करना।
2. अहिंसा के प्रयोग के सम्बन्ध में व्याप्त भ्रान्तियों का निराकरण करना।
3. लोकतांत्रिक शासन में अहिंसा की आवश्यकता एवम् महत्व को प्रतिपादित करना।
4. अहिंसा के प्रयोग को बढ़ावा देना।
5. अहिंसा के व्यक्तिगत, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय आयामों का अध्ययन करना।
6. वर्तमान में अहिंसा की प्रासंगिकता सिद्ध करना।

उपकल्पनाएं

1. अहिंसा मानव की स्वभाविक प्रवृत्ति है।
2. अहिंसा की शक्ति असीमित होती है।
3. अहिंसा के प्रयोग के लिए निडरता एवम् साहस पूर्व शर्त है।
4. अहिंसा लोकतंत्र की सुदृढ़ता के लिए आवश्यक है।
5. अहिंसा के द्वारा न्यायसम्मत राष्ट्रीय एवम् अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था की स्थापना की जा सकती है।
6. वर्तमान में अहिंसा ही वैश्विक समस्याओं का एकमात्र समाधान है।

शोध प्रविधि

अहिंसा की अवधारणा को स्पष्ट एवं उसकी प्रासंगिकता सिद्ध करने के लिए गांधी जी की विभिन्न रचनाएं, उपलब्ध गांधी साहित्य, विभिन्न विद्वानों एवं लेखकों की रचनाएं, पत्र–पत्रिकाओं में छपे लेखों, संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रतिवेदन इत्यादि का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त गांधीवादी प्रबुद्ध विचारक, गांधी अध्ययन केन्द्र संचालकगण, राजनेताओं, विद्यार्थियों, प्रबुद्ध शिक्षकगण, आम नागरिकों से बातचीत करके जानकारी प्राप्त कर तथ्यों का संकलन किया गया है। इस तरह प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त तथ्यों व जानकारी के आधार पर ही मूल्यांकन कार्य किया गया है।

अहिंसा के सैद्धान्तिक, क्रियात्मक और व्यावहारिक पक्ष

अहिंसा मानव की स्वभाविक प्रवृत्ति है

यदि मानव जाति स्वभाव से अहिंसक न होती हो इसने बहुत पहले अपना विनाश कर लिया होता। जब मनुष्य की आत्मा पर अज्ञान, असत्य और क्रोध का आवरण चढ़ जाता है तभी वह तात्कालिक रूप से हिंसक हो जाता है। गांधी जी के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में अहिंसा का अनिवार्य अस्तित्व इस तथ्य से निर्धारित हुआ है कि प्रत्येक जीवित प्राणी में चेतना का मूल कारण उसमें विद्यमान आत्मा हैं, जो ब्रह्मा से उत्पन्न हुयी है और उसी का अनिवार्य अंश है। अहिंसा की क्रियाशीलता, इस विचार पर आधारित है कि सारा संसार एक आध्यात्मिक एकता के सूत्र से जुड़ा हुआ है।

अतः अहिंसा मानव जाति का नियम है और पशुबल से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। अहिंसा उसी प्रकार से मानवों का नियम है जिस प्रकार से हिंसा पशुओं का नियम है। पशु की आत्मा सुप्त अवस्था में होती है और वह केवल शारीरिक शक्ति के नियम को ही जानता है। मानव की गरिमा एक उच्चतर नियम – 'आत्मा के बल का नियम' के पालन की अपेक्षा करती है।

अभय अहिंसा की पूर्व शर्त है

अहिंसक व्यक्ति को भय से मुक्त होने के लिए ऊँचे से ऊँचे बलिदान करने की क्षमता का विकास करना होता है। ईश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य का भय नहीं होता है। अहिंसक व्यवहार के लिए केवल दो बाते होनी चाहिए – (1) बदला लेने के लिए मारने की इच्छा से विरक्ति (2) प्रतिशोध की भावना मन में लाए बिना मौत का सामना करने का साहस।

''अहिंसा कायरता की आड़ नहीं है बल्कि यह वीर का सर्वोच्च गुण है। अहिंसा और कायरता में कोई मेल नहीं है। अहिंसा का मार्ग हिंसा के मार्ग की तुलना में कहीं ज्यादा साहस की अपेक्षा रखता है।''[7] अहिंसा का अस्त्र बहादुर व्यक्तियों द्वारा ही प्रयोग किया जा सकता है। जब तक व्यक्ति पूरी तरह निर्भीक नहीं होगा, वह सर्वोच्च सद्गुण के रूप में अहिंसा की प्रभावकारी शक्ति को आत्मसात् ही नहीं कर सकेगा। ''व्यक्ति के अहिंसक आचरण की प्रकृत्ति, उसके पास उपलब्ध आत्मबल और निर्भीकता की मात्रा के अनुपात में निश्चित होती है। इसी आधार पर गांधी जी ने अहिंसा की तीन श्रेणियां – बहादुर की अहिंसा, व्यावहारिक अहिंसा और कायरों की अहिंसा, निर्धारित की है।''[8]

अहिंसा के लिए विन्रमता आवश्यक है

यदि मनुष्य में गर्व और अहंकार हो तो उसमें अहिंसा नहीं टिक सकती है। अहिंसा के मार्ग पर पहला कदम यह हैं कि हम अपने दैनिक जीवन में परस्पर सच्चाई, विन्रमता, सहिष्णुता और प्रेममय दयालुता का व्यवहार करें। अहिंसा मनुष्य के स्वाभिमान और आत्मसम्मान की पूरी तरह रक्षा करती है। यह एक ऐसी शक्ति हैं जिसे बच्चे, युवा, स्त्री–पुरूष या प्रौढ़ व्यक्ति सभी साध सकते हैं। बेशर्त उन्हें ईश्वर में जीवित आस्था हो और वे समस्त मानव जाति को एक समान प्रेम करते हो। यह उच्चतम कोटि का सक्रिय बल है। यह आत्मबल अर्थात् हमारे अंदर बैठे ईश्वरत्व की शक्ति है।

अहिंसा सत्य का मार्ग है

अहिंसा के बिना सत्य का शोध और उसकी प्राप्ति असंभव है। अहिंसा साधन है और सत्य साध्य है।

अहिंसा–हिंसा की तुलना में अधिक प्रभावकारी होती है

अहिंसा हिंसा की तुलना में नैतिक और व्यावहारिक दोनों ही दृष्टियों से अधिक प्रभावशाली है। हिंसा से किसी भी समस्या का हल नहीं हो सकता है, क्योंकि हिंसा केवल प्रतिहिंसा को जन्म देती है। हिंसक प्रतिकार हिंसा–प्रतिहिंसा की एक निरर्थक व आत्महीन प्रक्रिया को जन्म देता है। यदि हिंसा से कभी तात्कालिक

विजय प्राप्त हो भी जाए तो ऐसी विजय न तो स्थायी हो सकती है और न ही विजेता की श्रेष्ठता का प्रमाण होती है। जबकि अहिंसा के द्वारा विरोधी के मन और मस्तिष्क पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

''अहिंसा ही वैध है। हिंसा कभी वैध नहीं हो सकती है।''[9] ''हिंसा पानी की तरह होती है – निकास का मार्ग मिलते ही पूरे जोर के साथ भयंकर वेग से आगे बढ़ती है। अहिंसा में उन्माद नहीं है। यह अनुशासन का सार है। लेकिन एक बार सक्रिय हो जाने पर विकट से विकट हिंसा भी उसका दमन नहीं कर सकती है।''[10] अतः हिंसा का कारगार जवाब केवल अहिंसा ही है।

अहिंसा की शक्ति असीमित होती है

क्योंकि यह ईश्वरीय शक्ति का मानवीय रूपान्तरण है। शाश्वत प्रेम के रूप में अहिंसा एक जीवन्त शक्ति है और पूरा संसार इस शक्ति द्वारा नियंत्रित और संचालित है। कठोरतम धातु भी अपेक्षित ताप पाकर पिघल जाती है। उसी प्रकार कठोरतम हृदय भी अहिंसा को अपेक्षित ताप से पिघल जाता है और यह ताप पैदा करने की अहिंसा की क्षमता अपरिमित होती है।

''अहिंसा मानवता को उपलब्ध सबसे बड़ा बल है। मनुष्य ने अपनी होशियारी से विनाश के जो शक्तिशाली अस्त्र–शस्त्र बनाये हैं, अहिंसा उनसे अधिक शक्तिशाली है।''[11]

अहिंसक संघर्ष में कोई विद्वेष नहीं रहता है

अहिंसा विरोधी को मित्र बना देती है। अपराध से घृणा करों, अपराधी से नहीं, एक ऐसा नीति वचन है जिसे समझना तो काफी आसान है, परन्तु आचरण शायद ही कभी किया जाता है। इसीलिए संसार में घृणा का विष फैलता जा रहा है। आचरणकर्ता के साथ आचरण भी मर जायेगा, इस विश्वास से हम आचरणकर्ता को नष्ट कर देते है। लेकिन गांधीजी के अनुसार, उन आचरण को हम स्वयं अपना लेते है और जिस व्यक्ति को समाप्त करते हैं, स्वयं उससे भी बुरे सिद्ध होते है। दरअसल हम बुराई की जड़ को नहीं पहचानते है। जबकि अहिंसा अपराधी को नहीं बल्कि अपराध को जड़ सहित समाप्त करती है।''[12]

अहिंसा की सफलता सुनिश्चित है

''अहिंसा की जड़े हृदय में स्थित होती है अहिंसक प्रतिकार से द्रवित होने वाला व्यक्ति भौतिक शक्ति के आगे समर्पण नहीं करता है, अपितु उसका सचेतन हृदय अहिंसक प्रतिकार के पीछे निहित प्रेम की शक्ति से अभिभूत हो जाता है। अहिंसक व्यक्ति अत्याचारी के समक्ष शरीर को तो समर्पित कर देता है और अपनी आत्मा को पूरी तरह मुक्त कर लेता है। इस प्रकार वह पराजय की संभावना से परे हो जाता है और कोई भी अत्याचारी उसकी आत्मा को क्षति नहीं पहुंचा सकता है।''[13]

''अहिंसा ऐसा अस्त्र है जिसे कोई भी भौतिक बल नहीं झुका सकता है। अहिंसा की शक्ति को संख्या या मात्रा की सीमा में नहीं बांधा जा सकता है।''[14] ''इसके माध्यम से कोई एक व्यक्ति भी, अपनी नैतिक शक्ति, आत्मबल और ईश्वर में आस्था के आधार पर बिना किसी बाहरी बल या उपकरण का प्रयोग किये हुए, किसी भी प्रकार के अन्याय और अत्याचार का मुकाबला कर सकता है।''[15]

''हथियारबन्द सिपाही अपनी ताकत के लिए अपने हथियारों पर निर्भर रहता है। उससे उसका हथियार छीनने पर वह बेबस हो जाता है। लेकिन जिस व्यक्ति ने अहिंसा के सिद्धान्त को सही अर्थो में हृदयंगम कर लिया है, उसका हथियार ईश्वर प्रदत्त शक्ति होती है, जिसके जोड़ का हथियार दुनिया के पास आज तक नहीं है।''[16]

''अहिंसा रेडियम की तरह काम करती है। रेडियम की अतिसूक्ष्म मात्रा निरन्तर, चुपचाप तब तक काम करती रहती है जब तक कि रोगग्रस्त ऊतक के समूचे पिण्ड को स्वस्थ ऊतक में नहीं बदल देती है। उसी प्रकार थोड़ी सी सच्ची अहिंसा चुपचाप, सूक्ष्म और अदृश्य रूप से कार्य करती है और समूचे समाज का कायाकल्प कर देती है।''[17]

अहिंसा सार्वभौमिक है

यह व्यक्तियों के समान समाज व राष्ट्र पर भी लागू होती है। यह सामाजिक आचरण का भी एक नियम है। इसे सामाजिक राजनीतिक व्यवहार और व्यवस्था में भी लागू किया जा सकता है। एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था अहिंसा पर ही आधारित हो सकती है। अहिंसा की वास्तविक अभिव्यक्ति, लोगों की निःस्वार्थ सेवा के रूप में होती है। इस प्रकार सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में अहिंसा के सिद्धान्त को प्रयुक्त करने का अर्थ होगा, हर प्रकार के अन्याय, दमन, शोषण और उत्पीड़न की निजी और सामूहिक रूप से अहिंसक प्रतिकार। अतः गांधी जी के अनुसार ''अहिंसा की उत्कृष्टतम अभिव्यक्ति, एक दोषमुक्त सामाजिक व्यवस्था के निर्माण के संकल्प के रूप में होती है।''[18]

''अहिंसा का विज्ञान ही शुद्ध लोकतंत्र की ओर ले जा सकता है।''[19] लोकतंत्र और हिंसा साथ–साथ नहीं चल सकते है। राष्ट्रीय स्तर पर अहिंसा को मान्यता दिये बिना संवैधानिक या लोकतांत्रिक सरकार नहीं चलाई जा सकती है।

अहिंसा के अन्तर्राष्ट्रीय आयाम

''अहिंसा राष्ट्र के सामाजिक और राजनीतिक जीवन को संचालित करने वाली एक प्रेरक और विश्वसनीय शक्ति तो है ही, साथ ही अहिंसा के माध्यम से ही एक न्यायसम्मत अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था का निर्वाह किया जाना संभव है।''[20] अहिंसा के द्वारा किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय समस्या का समाधान किया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय जगत में न्याय की प्रतिष्ठा तभी की जा सकती है, जबकि राष्ट्रों के मध्य होने वाले टकरावों का अहिंसक रीति से प्रतिकार किया जाए।

''युद्ध और आक्रमण वास्तव में अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों के समाधान में हिंसा के सिद्धान्त को अपनाने का ही स्वभाविक परिणाम है। अन्तर्राष्ट्रीय तनावों के समाधान के लिए हिंसा के नियम ने किसी समस्या का हल करने की बजाय नई समस्याओं को जन्म दिया है और भौतिक बल की श्रेष्ठता के आधार पर, बड़े देशों द्वारा छोटे देशों के शोषण को एक प्रकार से सैद्धान्तिक स्वीकृति दी है।''[21] अस्त्र–शस्त्रों की बढ़ रही होड़ को भी तभी रोका जा

सकता है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय अहिंसा को एक सार्वभौम सिद्धान्त के रूप में अपना लें।

वर्तमान में अहिंसा की प्रासंगिकता

अहिंसा का आदर्श भारतीय उपनिषदों, बुद्ध तथा महावीर के दर्शन में शताब्दियों पहले प्रतिपादित किया गया था। लेकिन गांधी जी ने नवीन संदर्भ में अहिंसा के सिद्धान्त को परिमार्जित किया और मानवीय आचरण के एक जीवन्त नियम के रूप में उसकी पुर्नव्याख्या की है। आज पूरे विश्व में हिंसा का साम्राज्य फैलता जा रहा है। विभिन्न देशों के मध्य परस्पर तनाव बढ़ता जा रहा है। प्रत्येक देश बारूद के ढेर पर बैठा है। राष्ट्रों के मध्य विध्वंसकारी हथियारों के निर्माण और एकत्रित करने की प्रतिस्पर्धा हो रही है। इस कारण विश्व का प्रत्येक देश असुरक्षित एवं तनावग्रस्त महसूस कर रहा है।

दूसरी तरफ राष्ट्रीय परिदृश्य में भी हिंसा एवं आतंक का ग्राफ बढ़ रहा है। भ्रष्टाचार की अमर बेल चारों तरफ फैली हुई है। राजनेताओं पर भ्रष्टाचार के आरोप उजागर है। भौतिकता की चकाचौंध में रातों–रात धन व सुविधाएँ प्राप्त करने की होड़ में नैतिक अवमूल्यन जारी है। साधनों की पवित्रता की भावनाएँ लुप्त होती जा रही है। राजनीति का व्यावसायीकरण हो रहा है। लूटपाट, डकैती, हत्याएँ, बलात्कार, दहेज हत्या, आतंकवाद, मुनाफाखोरी, कालाबाजारी, शोषण, एक–दूसरे को नीचा दिखाने की घटनाएं, अशिष्ट भाषा का प्रयोग मॉब–लिचिंग इत्यादि घटनाएं समाचार पत्रों–पत्रिकाओं, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में देखने एवं सुनने को मिल रहे हैं।

निष्कर्ष

''ऐसे समय एवं परिदृश्य में गांधीजी के अहिंसा सम्बन्धी विचार ज्यादा प्रासंगिक और सार्थक है।''[22] यह जरूरी हो गया है कि हम क्रोध का जवाब प्रेम से और हिंसा का जवाब अहिंसा से देने के नियम को जीवित करें। ''यदि समाज व राष्ट्रों को निरन्तर मानव गरिमा के साथ जीना है और शांति को प्राप्त करना है तो अहिंसा के मार्ग को अपनाना ही होगा। पीड़ित संसार के लिए अहिंसा के रास्ते के अलावा आशा की और कोई किरण नहीं है।''[23] और सच्चाई यह है कि हिंसा और अहिंसा के द्वन्द्व में अंततः विजय सदा अहिंसा की ही हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *महात्मा गांधी –यंग इंडिया, गांधीजी के संपादकत्व में अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र, अहमदाबाद से प्रकाशित, दिनांक 11.08.1920, पृ. 03*
2. *महात्मा गांधी – हरिजन, गांधीजी द्वारा संस्थापित अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र, हरिजन सेवक संघ, पूना के तत्वाधान में प्रकाशित, दिनांक 07.09.1935, पृ. 180–81*
3. *महात्मा गांधी – नवजीवन, गांधीजी द्वारा संपादित और अहमदाबाद से प्रकाशित, गुजराती साप्ताहिक पत्र, दिनांक 31.03.1929 पृ. 02*
4. *डॉ. मधुकर श्याम चतुर्वेदी – प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक, कलैक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, खण्ड–50 पृ. 207 से उद्धत कॉलेज बुक हाउस जयपुर*
5. *महात्मा गांधी – हरिजन–अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र, हरिजन सेवक संघ पूना के तत्वाधान में प्रकाशित, दिनांक 19.12.1936, पृ. 39*
6. *महात्मा गांधी – यंग इंडिया–अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र, अहमदाबाद से प्रकाशित, दिनांक 01.08.1920, पृ. 03*
7. *महात्मा गांधी – हरिजन–अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र, नवजीन ट्रस्ट अहमदाबाद से प्रकाशित, दिनांक 04.08. 1946, पृ. 248–249*
8. *डॉ. मधुकर श्याम चतुर्वेदी – प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक, कॉलेज बुक हाउस जयपुर, पृ. 289*
9. *महात्मा गांधी –हरिजन, अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र, नवजीन ट्रस्ट अहमदाबाद से प्रकाशित, दिनांक 20.10.1946, पृ. 369*
10. *महात्मा गांधी –हरिजन, अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र, हरिजन सेवक संघ पूना के तत्वाधान में प्रकाशित, दिनांक 21. 03.1939, पृ. 433*
11. *महात्मा गांधी –हरिजन, अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र, हरिजन सेवक संघ पूना के तत्वाधान में प्रकाशित, दिनांक 20. 07.1935, पृ. 180–181*
12. *महात्मा गांधी –यंग इंडिया, अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र, अहमदाबाद से प्रकाशित,दिनांक 17.03.1927, पृ. 85*
13. *महात्मा गांधी– नवजीवन–गांधीजी द्वारा सम्पादित गुजराती साप्ताहिक पत्र अहमदाबाद से प्रभावित, दिनांक 01.11.1921, पृ. 04*
14. *वही*
15. *आर के प्रभु एवं यू आर राव – महात्मा गांधी के विचार, द माइण्ड ऑफ महात्मा गाँधी का हिन्दी अनुवाद, नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया, नई दिल्ली, पृ. 112–113*
16. *महात्मा गांधी – हरिजन – अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र, हरिजन, हरिजन सेवक संघ पूना के तत्वाधान में प्रकाशित, दिनांक 19.11.1935, पृ. 341–42*
17. *महात्मा गांधी – हरिजन–अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र, हरिजन सेवक संघ पूना के तत्वाधान में प्रकाशित दिनांक 12.11.1938, पृ. 327*
18. *महात्मा गांधी –हरिजन–अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र, नवजीवन ट्रस्ट अहमदाबाद से प्रकाशित, दिनांक 12.04. 1942, पृ. 248*
19. *महात्मा गांधी – हरिजन – अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र, हरिजन सेवक संघ पूना के तत्वाधान में प्रकाशित दिनांक 15.10.1938, पृ. 290*
20. *महात्मा गांधी –यंग इंडिया – अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र, बम्बई से प्रकाशित, दिनांक 07.05.1925, पृ. 178*
21. *आर.के. प्रभु एवं यू आर राव – महात्मा गांधी के विचार, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नई दिल्ली, पृ. 120–125*
22. *डॉ. बी.एम. शर्मा – अहिंसा की ताकत – राजस्थान पत्रिका सीकर संस्करण दिनांक 19.09.2018, पृ. 04*
23. *महात्मा गांधी –हरिजन–अंग्रेजी साप्ताहिक पत्र, नवजीवन ट्रस्ट अहमदाबाद से प्रकाशित, दिनांक 26.06. 1947, पृ. 85*

पत्र पत्रिकाएँ–

1. *द हिन्दु*
2. *राजस्थान पत्रिका*
3. *दैनिक भास्कर*
4. *इंडिया टुडे*
5. *प्रतियोगिता दर्पण*